# कल्हण एवं उसका इतिहासलेखन

प्राचीन भारतीय इतिहासकारों में कल्हण का नाम सर्वोपरि है, जिसने राजतरंगिणी के नाम से कश्मीर का इतिहास लिखा। समकालीन उपलब्ध स्रोतों के आधार पर विद्वानों ने कल्हण के प्रारम्भिक जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इनके अनुसार कल्हण एक कश्मीरी ब्राह्मण था तथा भार्गव कुल की सारस्वत शाखा से सम्बद्ध था। कल्हण चम्पक (कंपक / कनपका) का पुत्र था जो कश्मीर के राजा हर्ष (1089 ई. से 1101 ई.) के यहां मंत्री थे। हर्ष की मृत्यु के बाद वे स्वतः अपने पद भार से पृथक हो गए थे। 1135 ई. में उनकी मृत्यु हुई।

कल्हण को एक इतिहासकार के रूप में प्रतिष्ठित होने का श्रेय उसके प्रसिद्ध ग्रन्थ राजतरंगिणी को जाता है। राजतरंगिणी का अर्थ है "River of kings". यह एक लम्बा वर्णनात्मक काव्य है जिसमें आठ हजार संस्कृत श्लोक (छन्द) हैं जो आठ सर्गों में बंटे हैं। प्रत्येक सर्ग को कवि ने तरंग की संज्ञा दी है जिसका अर्थ है लहर। कल्हण ने इस ग्रन्थ की रचना 1148 ई. में आरम्भ की तथा दो वर्षों में इसे पूरा कर लिया।* इसमें कश्मीर के राजाओं के काल्पनिक समय (1184 ई.पू.) से ग्रन्थ के रचना समय (1148-1149 ई.) तक का सिलसिलेवार इतिहास है। संस्कृत भाषा की कृतियों में राजतरंगिणी को एकमात्र ऐतिहासिक ग्रंथ माना जा सकता है तथा कश्मीर को भारत के ऐसे एकमात्र क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है जिसकी इतिहास लेखन की परम्परा रही है और यह राजतरंगिणी के रूप में है। वाईडर ने इसे भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध इतिहास कहा है। यह कश्मीर का इतिहास है जिसमें अनेक राजवंशों का वर्णन है। इस ग्रंथ का प्रामाणिक अनुवाद R.L. Steen ने किया है। 8000 संस्कृत छन्दों तथा 8 तरंगों से युक्त इस ग्रन्थ को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रथम भाग में 1 से 3 तरंग (सर्ग) को रखा जा सकता है जिसमें कल्हण ने समसामयिक परम्पराओं के आलोक में

* इसमें कश्मीर का आदि प्राचीन समय से भूमि की सूची का विवरण है।

अतीत की घटनाओं का उल्लेख किया है। इनमें कश्मीर का 7 वीं शताब्दी तक का इतिहास है।

द्वितीय भाग में 4 से 6 तरंगों को रखा जा सकता है जिनमें काकोटा तथा उत्पल राजवंशों का इतिहास है। इसके लेखन में कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों तथा समकालीन इतिहासकारों के स्त्रोतों से सामग्री का उपयोग किया है।

तृतीय भाग में 7 वें एवं 8 वें अर्थात् अन्तिम दो तरंगों को रखा जा सकता है। यह राजतरंगिणी का सबसे लंबा तथा विस्तृत भाग है जिसमें 12 वीं शताब्दी का विवरण है। इसके अन्तर्गत कश्मीर के दो लोहर राजवंशों का इतिहास वर्णित है, जिसके लेखन में कल्हण ने अपने व्यक्तिगत ज्ञान एवं प्रत्यक्ष दर्शन से संग्रहीत साक्ष्यों को आधार बनाया है तथा कतिपय तथ्यों को उसने स्त्रोतों से संग्रहीत तथ्यों से पूर्ण किया है।

राजतरंगिणी के तरंगों के लेखन में जो बात ध्यान देने योग्य है वह है, वृत्तांत का बदलता स्वर। पहले खण्ड में रचयिता, जो कि ब्राह्मण है, एक मंत्री का पुत्र है तथा संस्कृत का विद्वान है, एक तस्वीर बनाता है जो कि उसके दृष्टिकोण से एक आदर्श विश्व था जिसमें पुत्र अपने पिता के उत्तराधिकार होते थे तथा जिसमें वर्ण एवं लैंगिक श्रेणी की परम्परा का कठोरता से पालन किया जाता था। हालांकि अगले दो खण्डों में वह विस्तार से बताता है कि इन नियमों का उल्लंघन कैसे हुआ। कल्हण के अनुसार स्त्री शासकों का होना किसी संन्यास जैसा था। कल्हण का ऐसा कहना समाज में स्त्री के दशा की ओर स्पष्टतः संकेत करता है। कल्हण के लेखन की जो बात बेजोड़ बनाती है यह है उसका आरम्भ में ही उन स्त्रोतों को बताना, जिनकी मदद से वह राजतरंगिणी के लेखन में आगे बढ़ा। इनमें धर्मदास में संबद्ध शासकीय तथा राजकीय उद्घोषणाएँ, प्रशस्तियों या गुण-गान तथा शास्त्र शामिल है।

राजतरंगिणी की विषय वस्तु सम्यक् है। इसमें कश्मीर की उत्पत्ति पौराणिक मनु वैवस्वत की परम्परानुसार वर्णित है। पौराणिक शासकों के अनन्तर मातृगुप्त एवं विक्रमादित्य द्वितीय, कुषाण, हूण, गौर्य, अशोक, काकोटक शासन आदि का उसमें पूरा इतिहास वर्णित है। इसी आधार पर कुछ विद्वान

कल्हण को प्राचीन भारतीय इतिहासकार मानते हैं। पर कल्हण की कवि प्रतिभा और उसके साक्ष्यों में पौराणिकता का बाहुल्य देखकर कुछ इतिहासकारों का कहना है कि वह केवल कवि ही था, उसे इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। कल्हण एक कवि था अथवा इतिहासकार इसे जानने के लिए हमें उसके इतिहास दर्शन को समझना होगा।

कल्हण का इतिहास दर्शन :

भारत में इतिहास लेखन परम्परा के विकास के संदर्भ में प्राचीन एवं पूर्व मध्य काल के मिलन बिन्दु को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। जबकि देश के विभिन्न भागों में स्थानीय परम्पराओं का समावेश लेखकों की विशिष्ट कृतियों में हुआ था। इनमें कश्मीर, नेपाल, असाम एवं गुजरात की इतिहास लेखन शैलियाँ विशेष उल्लिखित की जाती हैं जिन पर पूर्ववर्ती गाथा, नाराशंसी आख्यान, इतिहास, पुराण का प्रभाव अवश्य है, पर समग्र रूप में पुरातन शैली की अपेक्षा इनके नवीन दृष्टिकोण के प्रति संदेह नहीं किया जा सकता। इन नवीन परम्पराओं एवं मान्ताओं का सुन्दर निदर्शन कश्मीरी कवि कल्हण की शैली है जिसका निर्वहन राजतरंगिणी में हुआ है।

राजतरंगिणी के अनुशीलन से पता चलता है कि कल्हण ने इस ग्रंथ के लेखन में अपने पूर्वापर एवं समकालीन स्त्रोतों, जैसे- चिट्ठियों, शासनादेशों, अभिलेखों, मुद्राओं, प्राचीन स्मारकों तथा राजकीय अभिलेखों जैसे साक्ष्यों में सुरक्षित राजावलियों एवं वंशावलियों का उपयोग किया है। कल्हण के इन स्त्रोतों का उल्लेख अपने ग्रन्थ के आरम्भ के श्लोकों में किया है। कुछ स्त्रोतों की वह आलोचना भी करता है, जैसे- सुव्रत, क्षेमेन्द्र की क्रॉनिकल। डॉ. बाशम के अनुसार, कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती ग्यारह इतिहासकारों एवं नीलमत पुराण का उपयोग किया है। उसने केवल तथ्यों के संग्रह और तिथिक्रमों को ही विवरण का आधार नहीं बनाया, बल्कि मन्दिरों एवं मठों में रखे गए संलेखों, अभिलेखों एवं प्रशस्तियों का भी उपयोग किया है। प्राचीन मुद्राओं, मौखिक एवं लिखित तत्कालीन हिन्दू जीवन में प्रचलित परम्पराओं, जैसे- ललितादित्य की मृत्यु 769 ई. से सम्बद्ध परम्परा तथा यशस्कर की मृत्यु सम्बन्धी परम्परा आदि को भी आधार बनाया है। पर अपनी ओर से किसी को भी सही नहीं माना है। उसने लिखा है 'जब बड़ों की मृत्यु होती है तो उनके संबंध में अनेक प्रकार की कहानियाँ लोक जीवन में प्रचलित हो जाती हैं।'

कल्हण ने किसी भी परम्परा को प्रचलन के रूप में स्वीकार नहीं किया बल्कि उसकी प्रामाणिकता के संदर्भ में अपना विवेचन भी। और इस तरह वह आधुनिक इतिहास लेखन की विधाओं को स्वीकार करता हुआ दिखाई देता है। इसी आधार पर राजतरंगिणी को भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध इतिहास स्वीकार किया गया है, और कल्हण को प्राचीन भारत का सबसे अच्छा इतिहासकार माना गया है। वस्तुतः कल्हण ने आधुनिक इतिहास लेखन की विधा को जन्म दिया।

कल्हण का ध्येय आदिकाल की देत कथाओं से आरम्भ करके अपने समय तक कश्मीर का एक विस्तृत इतिहास लिखने का था। वह अपने लेखन में साहित्यिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिक सत्य का समन्वय करना चाहता था। साहित्यिक सौन्दर्य के सिद्धान्त के लिए यह शान्त रस में महाभारत का प्रमाण विशेषतः प्रस्तुत करता है। उसने दरबारी संस्कृत श्लोकों के लेखन में मधुर प्रांजल भाषा का प्रयोग करते हुए घटनाओं का विस्तृत एवं सूक्ष्म विवेचन किया है। और कश्मीर के प्रत्येक राजा के राज्यारोहण की तिथियों को दूसरे और तीसरे भाग में दिया भी है। पर वह सभी घटनाओं की तिथि नहीं दे पाया है, जिसकी वजह से कुछ लोग उसे इतिहासकार के रूप में स्वीकार नहीं करते।

कल्हण ने कवि को ही इतिहासकार माना है और स्वयं को भी वैसा ही बतलाया है (राजतरंगिणी 1/4-5)। इतिहास के विषय में उसकी मान्यता थी कि इतिहास से अधिकाधिक व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हो सकती है क्योंकि प्राचीन शासनकालों के ऐतिहासिक अध्ययन से भविष्य के राजाओं के भाग्यों तथा दुर्भाग्यों को देखने की अधिक शक्तिशाली दूर दृष्टि प्राप्त होती है। (राजतरंगिणी - 1/189)

कल्हण के ग्रन्थ में राजाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। इसके कारणों का विश्लेषण करते हुए बाशम लिखते हैं कि सम्भवतः उसके पास सम्बद्ध साक्ष्य कम रहे होंगे। दूसरी बात कल्हण का मुख्य लक्ष्य राजाओं के जीवन से नैतिक शिक्षा प्रदान करना रहा होगा। पर राजतरंगिणी में कल्हण का अपनी मातृभूमि कश्मीर के प्रति जो राष्ट्र प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना झलकती है वह उसे राष्ट्रवादी इतिहासकारों की श्रेणी में ला खड़ा करती है। कल्हण के लेखन से उसका राष्ट्रप्रेम अवश्य झलकता है, पर कहीं पर पक्षपात की झलक नहीं मिलती। उसने घटनाओं को सत्य एवं निरपेक्ष रूप से प्रस्तुत किया है।

राजाओं का विवरण देने में भी वह पूर्वाग्रह से मुक्त दिखाई देता है। इसे हम जयसिंह प्रकरण में देख सकते हैं, जहाँ कल्हण ने उनके उत्तम गुणों की प्रशंसा के साथ-साथ दुर्गुणों की निन्दा भी की है। वस्तुतः कल्हण ने इतिहास लेखन के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त को प्रतिपादित किया, जब उसने कहा कि एक सच्चे इतिहासकार को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर निष्पक्ष इतिहास लेखन का कार्य करना चाहिये।

कल्हण के लेखन की एक अन्य विशेषता उसके द्वारा कर्म के सिद्धान्त को अधिक मान्यता देना है। उसके अनुसार कर्म मौलिक-नैतिक समर्थन प्रदान करता है, पर कुछ कर्मों का दण्ड इस या उस जन्म में भुगतना ही होता है। कल्हण भाग्य को ईश्वर मानते थे, पर आत्मिक विश्वास और शक्ति को भी स्वीकार करते थे। उनकी दृष्टि में राजा दैवीय नहीं, बल्कि प्रजा का पिता, पालक होता है। अतः प्रजा का ही एक अंग होता है।

राजाओं के वर्णन के आधार पर यदि हम कल्हण की समीक्षा करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि वह अपने लेखन के द्वारा अधिकाधिक राजाओं का परिचय देना चाहता था। उसने मातृगुप्त से आरम्भ किया है। मातृगुप्त कश्मीर का शासक था यह एक ऐतिहासिक सत्य है। वस्तुतः एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में कश्मीर का इतिहास यहां से आरम्भ होता है। कालगणना में उसने पौराणिक काल गणना को अपनाया है, अतः उसमें अशुद्धियाँ मिल सकती हैं। पर जिन फिलेखों का सहारा लेकर उसने ग्रन्थ-रचना की है वे विश्वसनिय साक्ष्य हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कल्हण का ऐतिहासिक दृष्टिकोण विश्वसनिय साक्ष्यों से परिपुर्ण था। उसने एक प्रत्यक्षदर्शी इतिहासकार की भूमिका का भी निर्वाह किया है। उसकी रचना में जनश्रुति एवं स्मृति में सुरक्षित अतीत कालीन राजनीतिक घटनाओं का भी समावेश हुआ है, जैसे, हर्ष का उल्लेख, जिसका शासन कई वर्षों पहले था, पर जिसकी स्मृति न्यूनाधिक रूप में जनमानस में सुरक्षित थी।

कल्हण के इतिहास दर्शन की समीक्षा करने पर हम पाते हैं कि उस पर पौराणिक परम्परा का प्रभाव था। उसने जलाशय में मग्न पृथ्वी का उद्धार कर उसे कश्मीर के रूप में

प्रतिष्ठित किया और उसके इतिहास का सूत्रपात प्रजापति कश्यप में किया है। दूसरी बात यह है कि उसने ईश्वर और भाग्य को भी स्वीकार किया, आत्मबल और कर्म को भी माना तथा कर्मफल को भी। इन सभी आधारों पर विश्लेषण करने पर ~~[illegible]~~ कल्हण के रचना की ऐतिहासिकता व उपादेयता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। उदाहरणार्थ कश्मीर के किसी रणादित्य नामक शासक के विषय में वह कहता है कि उसने अपने आदेश मात्र से कपित्थ फल प्राप्त किया। राजा मेघवाहन के विषय में वह कहता है कि वरुण देवता की कृपा से उसने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की थी, वरुण ने समुद्र के जल को स्थल रूप में बदल दिया और कश्मीर की सेना ने पैदल समुद्र पार कर श्रीलंका में प्रवेश किया था। ये सारे वर्णन काल्पनिक तथा ऐतिहासिकता से परे दिखाई देते हैं।

प्रारम्भिक रचयिताओं पर अपनी समीक्षा में कल्हण अत्यन्त कटु है क्योंकि उसके अनुसार इन रचयिताओं की रचनाएँ त्रुटियों से भरी पड़ी थी और उनमें शैली का अभाव था। दुर्भाग्यवश उसके पूर्ववर्तियों का कोई लेखन बच नहीं सका है, इसलिए हमारे पास उसके दावों का मूल्यांकन करने का कोई जरिया नहीं है। उसने स्वयं एक मिसाल रखा जिसका बाद के लेखकों ने अनुसरण किया और उसकी शैली को कश्मीर के सुल्तानों के समय तक जारी रखा।

कल्हण ने अपने लेखन को शिक्षात्मक पाठ की तरह देखा जो विशेष रूप से राजाओं को राजनीति की शिक्षा देने के लिए था। इनमें निष्पक्ष निर्णय देने और तटस्थता का भाव पैदा करने की कोशिश पर बल तो दिया ही गया है, साथ ही एक कवि की हैसियत से कल्हण ने संस्कृत भाषा की परंपरा के भीतर, जिसके अनुसार हर रचना में एक प्रमुख रस भाव होना चाहिए, जिस रस को महत्व दिया, वह शांत रस था। हालांकि राजतरंगिणी में ऐसे खण्ड भी हैं जिनमें युद्ध की विभीषिका और उसके बाद की तबाही ~~[illegible]~~ का कल्हण ने सजीव चित्रण किया है। रोचक बात यह है कि कल्हण की राजभाषा से स्पष्ट रूप में निकटता थी, पर वह एक दरबारी कवि नहीं था।

विभिन्न दृष्टिकोणों से कल्हण के लेखन का विश्लेषण और समीक्षा करने पर हम अन्ततः इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कुछ कमियों के होते हुए भी कल्हण की लेखन शैली

में एक ऐसी इतिहास लेखन की अभिनव धारा मिलती है जो अनेक दृष्टियों से इतिहास की आधुनिक परिभाषा के समीप है तथा जिसे गुण दोष विवेचन थ्यूसीडाइडीज, पॉलिबियस अथवा हेरोडोटस जैसे यूनानी इतिहासकारों के समकक्ष रखना कोई अतिशयोक्ति नहीं प्रतीत होती। इस भावना से आज इतिहासकारों को एक प्राचीन भारतीय इतिहासकार के रूप में स्वीकार करता है।

अन्त में कल्हण एवं उसके ग्रन्थ राजतरंगिणी का मूल्यांकन करते हुए इस प्रसिद्ध इतिहासविद् रोमिला थापर के शब्दों में यह कह सकते हैं कि, "काश्मीर के 12वीं शताब्दी के इतिहास का सम्बन्ध राज्य के प्रसिद्ध इतिहास लेखन से जुड़ा हुआ है। कल्हण की राजतरंगिणी के कारण उसकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ इतिहासकारों में की जाती है। यह ग्रन्थ उत्पन्न उच्चकोटि का है जो अपनी अद्वितीय स्पष्टता और परिपक्व मानसिकता के आधार पर किए गए ऐतिहासिक विश्लेषण को प्रदर्शित करता है।"

---